ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
"માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા"
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-5 अंक : 55

सहयोग शुल्क : रु. 1 / जुलाई : 2021

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सब मिलकर दिव्यांग भाई-बहनों के
जीवन में सुधार का काम करें ।
- प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

दिव्यांगजनों का विकास
देश का भी विकास है ।
- मुख्यमंत्री विजयभाई रुपाणी (गुजरात राज्य)

दिव्यांगजनों के विकास से
एक नए भारत का निर्माण होगा ।
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

''होंसलें के तरकश में, कोशिश का वो तीर जिंदा रखो,
हार जाओ चाहे जिंदगी में सबकुछ,
मगर फिर से जीतने की उम्मीद जिंदा रखो ।''

यह जिंदगी एक तुफान सी है । कभी संघर्ष की आंधी तो कभी खुशीयों की लहर आती रहती है । इस पूरी दुनिया में कोई भी इंसान पूर्ण नही होगा । हरकीसी में कुछ ना कुछ कमीयां होती है । कीसी में शारिरीक कमीयां तो कीसी के जीवन में और कोई कमीयां हंमेशा रहती है । इसलिए अपनी शारिरीक कमीयों को देखकर हींमत मत हारे बल्कि मजबूत जज्बे के साथ उन कमीयों के बीच भी आगे बढते रहे । सफलता की सीढीओ तक पहुंचने के लिए जरुरत होती है बस बुलंद हौंसले की और सब्र की । क्युंकी सब्र एक ऐसी सवारी है जो अपने सवार को कभी गिरने नही देती । नेपोलियन हिल ने क्या खुब कहा है की,

''किसी चीज की कमी ही सबसे बडा लाभ है,
जिसके कारण ईंसान सफल हो सकता है ।''

अपनी कमी सें रोने के बजाए उस कमी को ही सफलता में बदलने के लीए हंमेशा प्रयास करते रहेना चाहिए । दिव्यांगता सिर्फ हमारे दिमाग में होती हैं, हमारे शरीर में नही । शारिरीक रुप से दिव्यांग होने से कभी यह मत सोचे की भगवानने आपके साथ ये किया और क्युं कीया ? क्युंकी भगवानने आपको चुना है चुनौतीयाँ पार करने के लिए तो आप एक शानदार इंसान हुए जिसे भगवानने स्वयं चुना है । आपको इस बात का गर्व लेना है और इसी बात को लक्ष्य में रखकर आगे बढते रहोंगे तो आपको भी वो सब कुछ मिलेगा जो आप चाहते हो ।

आप सभी को निवेदन है की ''दिव्यांग सेतु'' पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु आपके आसपास दिव्यांगजनो के अनुलक्ष में हुए कार्यक्रम या कोई दिव्यांग व्यक्ति की जानकारी का ब्यौरा भी आप हमें भेज सकते है...

आओ, आप भी दिव्यांगनो के इस सेवायज्ञ में हमारा साथ दे...

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

जुलाई : 2021, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-5 अंक : 55

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦
संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

✦ सह-संपादक ✦
मिहिरभाई शाह
मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦
सेवा समर्पण फाउण्डेशन
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)
Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad
०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,
अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,
नया विकासगृह रोड, पालडी,
अहमदाबाद - ३८०००९
(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦
प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.
आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6
Phone : 079 26405200

वोइस टू दिव्यांग

कोरोना महामारी के कारण अनाथ हुए बच्चों को "पीएम केयर्स फोर चिल्ड्रेन" योजना (PM Cares For Children) योजना के तहत मीलेगी मदद ।

कोरोना की वैश्विक महामारी के इस संकट के कारण अनाथ हुए बच्चो के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अनाथ बच्चों के लिए कल्याणकारी योजनाओं की धोषणा की । उन्होंने कहा की.....,

"इस तरह की कठिन परीस्थिति में समाज के तौर पर हमारा कर्तव्य है की अपने बच्चों की देखभाल करें और उज्जवल भविष्य के लिए उनमें उम्मीद जगाएं । एसे सभी बच्चे जिनके माता-पिता की इस कोविड-19 के कारण मौत हो गइ हो, उन्हे, "पीएम केयर्स फोर चिल्ड्रेन" योजना के तहत सहयोग दिया जायेगा ।"

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

इस योजना के तहत माता-पिता खोनेवाले बच्चों को मुफ्त शिक्षा, इलाज, बीमा और स्टाईपेंड की सौगात दी जाएगी। इसके लिए पीएम केयर फंड से खर्च कीया जायेगा। 18 वर्ष का होने पर मासिक आर्थिक सहायता और 23 सालका होने पर 10 लाख रुपये की आर्थिक मदद मिलेगी। ''पीएम केयर्स फोर चिल्ड्रन'' स्कीम के तहत यह मदद की जायेगी।

★ क्या है इस योजना का उद्देश्य ? :-

इस फंड का इस्तेमाल 18 वर्ष के बाद अगलं पांच सालों तक उन्हें मासिक वित्तीय सहायोग (स्टाइपेंड) देने में किया जायेगा। इससे उच्च शिक्षा के वर्षो में वे अपनी नीजी जरुरतों को पूरा कर सकेंगे। 23 साल की उम्र में नीजी और पेशेयर इस्तेमाल के लीखे उन्हें एक निश्चित धनराशि दी जायेगी। उन्होंने कहा की बच्चें देश का भविष्य है। उनकी मदद के लिए सरकार हरसंभव प्रयास करेगी। सरकार चाहती है की वे मजबुत नागरीक बनें और उनका भविष्य उज्जवल हो।

★ केन्द्रिय विद्यालयों में होगा एडमिशन :-

उनकी शिक्षा के लिए कीए गए उपायों के बारे में पीएमओ ने कहा की दस वर्ष से कम उम्र के बच्चों का नजदिकी केंन्द्रिय विद्यालय या नीजी स्कुल में एडमिशन कराया जायेगा। हमे बच्चें 11 से 18 साल के बीच के हैं, उन्हें सैनिक स्कूल और नवोदय विद्यालय जैसे केंद्र सरकार के कीसी भी आवासीय स्कूल में नामांकीत कराया जायेगा। अगर बच्चा अपने अभिभावक या परीवार के कीसी सदस्य के साथ रहता है तो उसे नजदीकी केंद्रीय विद्यालय या नीजी स्कूल में नामांकीत कराया जायेगा। अगर बच्चे का एडमिशन नीजी स्कूल में कीया जाता है तो शिक्षा का अधिकार कानून के तहत उसका शुल्क पीएम केयर्स फंड से दिया जाएगा। उसके स्कूल युनिफोर्म, किताबें और कोपीयों के खर्च का भी भुगतान कीया जायेगा।

★ उच्च शिक्षा के लिए ब्याज मुक्त एजुकेशन लोन :-

उच्च शिक्षा के लिए बच्चों को पेशेवर पाठ्यक्रमों या भारत में उच्च शिक्षा की खातिर एजुकेशन लोन हासिल करने में मदद की जाएगी । इस लोन के ब्याज का पीएम केयर्स से भुगतान किया जाएगा ।

स्नातक और पेशेवर पाठ्यक्रमों के लिए विकल्प के तोर पर ट्युशन फी या पाठ्यक्रम शुल्क के बराबर राशि केंद्र या राज्य सरकार की योजनाओं के तहत दी जाएगी । जो बच्चे वर्तमान स्कॉलरशिप योजना के तहत पात्र नहीं हैं, उन्हें पीएम केयर्स से समान छात्रवृत्ति मुहैया कराई जाएगी ।

★ हेल्थ इंश्योरेंस की सुविधा :-

ऐसे सभी बच्चों को आयुष्मान भारत योजना या प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तौर पर लाभार्थी के रुप में नामांकित किया जाएगा । इसमें उन्हें पांच लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा मिलेगा । 18 वर्ष की उम्र तक इन बच्चों के लिए प्रीमियम की राशि पीएम केयर्स से दी जाएगी ।

महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की एक अप्रैल से 25 मई के बीच की रिपोर्ट का हवाला देते हुए हफ्ते बताया था कि देशभर में करीब 577 बच्चे कोविड-19 के कारण अनाथ हुए हैं ।

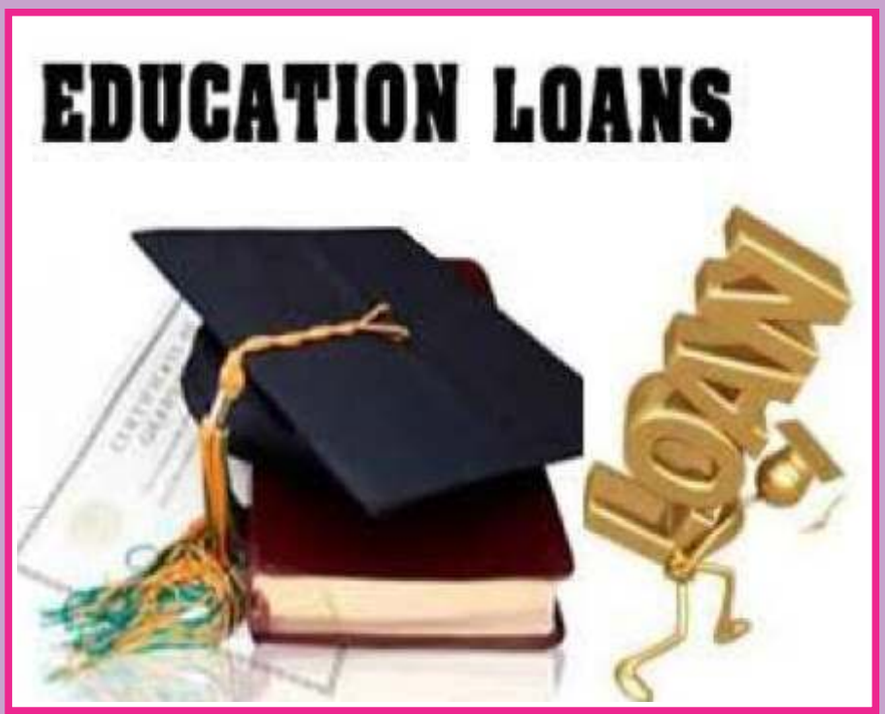

दिव्यांग बच्चों के लिए ई-कंटेट बनाने के लिए दिशा-निर्देश जारी, पीएम के ई-विद्या पहल की दिशा में कदम

केंद्रिय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने आज देश भर के दिव्यांग बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई के ई-कंटेट बनाने के तैयार दिशा-निर्देशों को मंजूरी दे दी । केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के विद्यालयी शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा गठित एक विशेषज्ञ समिति द्वारा तैयार इन दिशा-निर्देशों पर बनी रिपोर्ट, 'गाइलाइंस फॉर द डेवेलपमेंट ऑफ ई-कंटेंट फॉर चिल्ड्रेन विद डिसेबिलिटीज' को प्रधानमंत्री की ई-विद्या पहल के अंतर्गत दिव्यांग बच्चों के लिए ऑनलाइन/डिजिटल/ऑन-एयर शिक्षण में समानता लाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। कुल 11 सेक्शन और 2 परिशिष्ट वाली इस रिपोर्ट के माध्यम से सरकार का प्रयास है कि दिव्यांग बच्चों यानि 'चिल्ड्रेन विद स्पेशल नीड्स (सीडब्ल्यूएसएन)' का शिक्षण का अन्य बच्चों के समान स्तर पर लाया जा सके।

दिव्यांग बच्चों के लिए ई-कंटेंट चार सिद्धांतों पर आधारित होने चाहिए-समझ योग्य, संचालन योग्य, बोधगम्य या सुबोध एवं अशक्त । ई-कंटेंट में शामिल टेक्स्ट, टेबल, डाइग्राम, विजुअल, ऑडियो, आदि सभी राष्ट्रीय मानकों (जीआईजीडबल्यू 2.0) और अंतर्राष्ट्रीय मानकों डबल्यूसीएजी 2.1 ई-पब, डेजी, आदि) के अनुरुप होने चाहिए। जिन प्लेटफॉर्म (जैसे दिशा) पर ये ई-कंटेंट अपलोड किए जाएंगे और जिन प्लेटफॉर्म या डिवाइस से इन कंटेंट को पढ़ा/देखा जाएगा, उन सभी को तकनीकी मानकों को पूरा करना आवश्यक होगा । दिव्यांग बच्चों की जरुरतों के मद्देनजर उचित शैक्षणिक गुंजाइशों को शामिल किया जा सकता है।

समिति का सुझाव है कि बच्चों की टेक्स्टबुक्स को एस्सेसीबल डिजिटल टेक्स्टबुक्स (एडीटी) में चरणबद्ध तरीके से में भी तैयार किया जा सकता है।

दो दिव्यांग दोस्तों की प्रेरणादायी कहानी

बिना आंख और हाथ के दस साल में लगा डाले 10 हजार पेड़

ऐसा कहा जाता है कि इंसान कुछ करने की ठान ले तो उसे दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती। पढ़िए एक ऐसी ही कहानी जिसमें दो शारीरिक रुप से अक्षम दोस्तों ने अपने बंजर गांव में लगा दिए 10 हजार पेड़-पौधे। चीन के शिनझुआंग जिले में स्थित येली गांव को देखकर आप यकीन नहीं करेंगे कि यहां कभी बंजर जमीन हुआ करती थी। सालों पहले यहां कंकड़-पत्थरों के सिवाय कुछ भी नहीं था। लेकिन दो दोस्तों की पहल ने इस पूरे गांव को हरियाली से खुबसूरत बना दिया। आज इस गांव के आसपास चारों ओर लहलहाते पेड़-पौधे हैं। आगे जानिए क्यों खास हैं, इन दोनों दोस्तों की कहानी, इनकी तारीफ चीनी सरकार ने नही बल्कि दुनिया ने भी की है।

★ दो दिव्यांग दोस्तों का कमाल

अपने गांव की बंजर जमीन को जंगल में बदलने वाले इन दोनों दोस्तों के नाम जिया हैक्सिया और जिया वेंकी है। दोनों की उम्र 53 साल है। सबसे हैरान करने वाली बात है कि दोनों शारीरिक रुप से दिव्यांग हैं। जन्म से ही जिया हेक्सिया की एक आंख की रोशनी नहीं थी। साल 2000 में एक हादसे में उसने अपनी दूसरी आंख भी गँवा दी थी। दूसरी तरफ जिया बेंकी ने भी सिर्फ 3 साल की उम्र में, एक हादसे में अपने दोनों हाथ खो दिए थे। दोनों ही दोस्तों को अपनी इस शारीरिक अक्षमता के कारण कई परेशानियों का सामना करना पड़ा और नौकरी पाने में असफल रहे। इस नाकामियों से भरे दौर में उनका ध्यान बंजर होते अपने गांव की तरफ गया। फिर दोनों ने फैसला किया कि वे 8 एकड़

जमीन को लीज पर लेंगे और आने वाली पीढ़ी के लिए वहां पेड़-पौधे लगाना शुरु करेंगे।

उनकी मेहनत और लगन का नतीजा था कि न सिर्फ उनके गांव में दोबारा हरियाली लौटी बल्कि उसे बाढ़ के कहर से भी बचाया। दोनों दोस्तों की मेहनत को देखते हुए चीनी सरकार ने सराहना करते हुए उनकी आर्थिक सहायता की। दोनों दोस्तों ने सरकार से मिली इस महायता का इस्तेमाल नए पौधे लगाने में किया।

★ बिना हाथ और आंखो के कैसे लगाए पौधे ?

आंखों से न देख पाने वाले हेक्सिया को वेंकी अपनी पीठ पर लादकर ले जाते थे। उनके साथ ऐसे ही नदी पार करते थे। जबकि हेक्सिया पेड़ पर चढ़कर नई पौध लगाने के लिए टहनियां काटा करते थे। दोनों ने ऐसे ही एक दूसरे की मदद से इस नामुमकिन से दिखने वाले काम को मुमकिन कर दिया। दोनों एक दशक से ज्यादा लंबे समय से साथ हैं और इन 10 सालों में 10 हजार से ज्यादा पेड़-पौधे लगा चुके हैं।

★ काम आई दोनों की मेहनत

शारीरिक अक्षमताओं को दरकिनार करते हुए गांव के काम करने वाले इन दोस्तों की कहानी जब ओर लोगों तक पहुंची तो उन्हें काफी सम्मान मिला। लोगों ने उन्हें आर्थिक सहयोग करना शुरु किया। इस बीच चीन की मशहूर न्यूज एजेंसी ने इस खबर को पुख्ता किया कि हेक्सिया को उसकी बाई आंख की रोसनी वापस मिल सकती है। इसके लिए हेल्थ केयर डिपार्टमेंट फ्री में ऑपरेशन और इलाज करने के लिए तैयार है।

आंशिक रुप से दृष्टिहीन आईआईएम ग्रेजुएट की पहल
दिव्यांगों को रोजगार दिलाने के लिए बनाया पोर्टल, 50 को मिला काम

30 साल के विनीत सरायवाला आंशिक रुप से दृष्टिहीन हैं। एक दुर्लभ जेनेटिक बीमारी रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा से ग्रसित हैं। इसमें नजर धीरे-धीरे कमजोर होती जाती है। बीते साल जब लॉकडाउन के कारण लोगों की नौकरियां जा रही थीं, तो दिव्यांग भी इससे अछूते नहीं रहे।

कॉर्पोरेट दुनिया में साढ़े पांच साल बिता चुके और आईआईएम बेंगलुरु से पढ़े विनीत के पास इस दौरान दिव्यांगो के रिज्यूम की संख्या अचानक वढ़ गई। विनीत ने महसूस किया कि वह अधिकतम चार-पांच लोगों की ही मदद कर सकते हैं, लेकिन बड़े स्तर पर मदद करने के लिए उन्हें संस्थागत रुप से काम करना होगा।

मार्च 2020 से उन्होंने विशेष रुप से दिव्यांगों को समर्पित रोजगार पोर्टल पर काम करना शुरु कर दिया और दिसंबर 2020 में 'एटिपिकल एडवांटेज' (Atypical Advantage) शुरु किया। जमशेदपुर में रहने वाले विनीत बताते हैं कि उनका मुख्य उद्देश्य दिव्यांगों को आर्थिक रुप से स्वतंत्रता देना है।

विनीत बताते हैं कि अपनी नौकरी के दौरान जब उन्हें दिव्यांग वॉइस ओवर आर्टिस्ट और मॉडल की जरुरत पड़ी, तो उन्हें खोजने में काफी मशक्कत करनी पडी। देश में दिव्यांगों को समर्पित ऐसा कोई खास माध्यम नहीं था,

तब उन्हें इसका विचार आया। एटिपिकल एडवांटेज पूरी तरह योग्यता और हुनर पर आधारित पोर्टल है। इसमें 22 श्रेणियां - जैसे गायक, रचनात्मक लेखक, डांसर, वॉयस ओवर आर्टिस्ट, पेंटर आदि हैं। कोई भी यहां आकर अपनी जरुरत के हिसाब से लोगों को चुन सकता है।

विनीत बताते हैं कि प्लेटफॉर्म पर दिव्यांगों की खास योग्यता का जिक्र भर नहीं है, उनकी चुनौतियां और जीवनसंघर्ष की कहानी भी है। उनके पास अब तक 500 रिज्यूम आ चुके हैं और वे 50 लोगों को रोजगार दिला चुके हैं। पोर्टल के जरिए कई दिव्यांगों की पेंटिंग अमेरिका और यूरोप तक में बिक चुकी हैं। हाल ही में एमेजॉन के एक विज्ञापन में उनके एक दिव्यांग मॉडल को काम मिला है।

6 हाफ मैराथन, कई साइकिलिंग इवेंट में भी हिस्सा लिया

विनीत सरायवाला खुद को चुनौतियां देते रहते हैं। कहते हैं कि मैं पहले शर्मीला था और ज्यादा खेलकूद में हिस्सा नहीं लेता था। फिर मामा ने प्रेरणा दी, तो गाइड रनर के साथ दौड़ना शुरु किया। वह अब तक छह हाफ मैराथन दौड़ चुके हैं। इसके अलावा उन्होंने अल्ट्रा एंड्योरेंस साइकिलिंग रेस की है। इसमें टेंडम बाइक (इसमें दो लोग पैडल मार सकते हैं) से पुणे से गोवा तक 270 किलोमीटर नॉन स्टॉप साइकिल चलाई थी। विनीत कहते हैं कि चूंकि वे गाड़ी नहीं चला सकते, ऐसे में दौड़ने और साइकिल चलाने में उन्हें स्वतंत्रता और उन्मुक्तता का अहसास होता है।

गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा सामुहिक विवाह का आयोजन

13 जून 2021 को सामूहिक विवाह सुबह 9-00 बजे गायत्री विकलांग मानव मंडल की ओर से गरीब निराधार गांव में रहती दिव्यांग भाई बहन का समूह में शादी का आयोजन किया गया कुल २० जोडों का समूह में धार्मिक विधि से हिंदू संस्कृति से इनका कार्यक्रम किया गया और फिर इन बच्चों को आशीर्वाद के लिए दानवीर दाता संस्था के प्रमुख श्री सुनील भाई संस्था के प्रतिनिधि प्रकाश भाई शाह, मुकेश भाई सभी भाइयों मुना भाई नीतीन भाई अरुन भाई ओर सिवलाल जी गोयल पुखराज जी जैन गजानंद जी राठी सभी ट्रस्टीओने सी/एस/सी जनसेवा केन्द्र के कार्यकर्ताओं ने कन्या दान किया। उनहोने बच्चो को आशीर्वाद दिया और लड़कियों को कन्यादान में रसोई का सामान, बर्तन और तिजोरी, पलंग, गद्दी, चादर और चांदी की पायल, चांदी का गाय, सोने की नाक की चुन्नी और मंगलसूत्र वगेरे दान में देकर खुश किया। लड़कीयोंने सब को खुश होकर आर्शीवाद दिया। सारे परिवार के साथ मिलकर भोजन किया फिर मिठाई लेकर सभी ने खुशी मनाई और आशीर्वाद देकर संस्था को दानवीर दाताओं को लड़कियों ने आशीर्वाद दिया नव दंपति ने प्रभुता नया जीवन की शुरुआत की। अपने घर पर उनको किस तरह से रहना बड़े बुजुर्गों की सेवा करना और सब सीख दीया इस तरह से अपने धर में हमेशा दिए जलते रहेना इस तरह परिवार में रहना जिस तरह से दूध में शक्कर धुल जाए उस तरह से परिवार में तुम मिल जुल कर रहना ऐसा श्रीमती रुकमणी देवी ने संस्था के स्थापक ने बताया यह लड़कियां बिना माँ-बाप की है और सरकार श्री के नियमों का पालन करके भीड़ कम हो इस तरह से आयोजन किया गया था । रुकमणी देवी माहेश्वरी गायत्री विकलांग मानव मंडल में इस तरह से अनेक प्रोग्राम होते रहते है।

नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉक्टर हरिकृष्ण डाह्या भाई स्वामी स्कूल फॉर मेंटली डिसेबल्ड द्वारा आयोजित वर्चुअल समर कैंप कार्यक्रम का समापन समारोह।

कोरोना के इस वैश्विक संकट की वजह से बहुत सारी संस्थाएं और स्कूलें भी बंद होने की वजह से मेंटली डिसेबल्ड बच्चों की हालात ओर ज्यादा मुश्किल हो जाती है। बच्चे धर में ही रहकर ज्यादा जिद्दी, चिड़चिडे और हाइपर हो जाते हैं। ऐसे में एक्टिविटि के बिना बच्चों का मानसिक विकास थम जाता है।

मेमनगर स्थित नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉक्टर हरिकृष्ण डाह्या भाई स्वामी स्कूल फॉर मेंटली डिसेबल्ड द्वारा कोरोना की इस महामारी के दौरान भी पिछले 1 साल से मनो दिव्यांग बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण द्वारा अलग-अलग तरह की ट्रेनिंग देने का सेवायज्ञ चलाया जा रहा है। इस सेवायज्ञ का यही मुख्य उद्देश्य है कि धर पर रहकर ही अलग-अलग तरह की एक्टिविटी के द्वारा मनो दिव्यांग बच्चों का मानसिक विकास हो सके। इस सेवायज्ञ के भाग रुप 3 जून से लेकर 5 जून तक मनो दिव्यांग बच्चों के लिए वर्चुअल समर कैंप का आयोजन किया गया था। जिसमें अहमदाबाद के अलावा सूरत, भावनगर, जूनागढ़, अंकलेश्वर, भरुच, बडौदा, कच्छ, मेहसाणा और मुंबई जैसे अलग-अलग सहरों के बच्चे भी जुड़े थे।

सोमवार से लेकर शनिवार तक इस वर्चुअल समर कैंप में सुबह 10-00 बजे से 12-00 बजे तक हर रोज अलग-अलग सेशन होते थे। पहला सेशन योगा और डांस का रहता था और दूसरे सेशन में बच्चों को आर्ट एंड क्राफ्ट एक्टिविटी सिखाई जाती थी। हर शनिवार को बच्चों को मोटिवेट करने के लिए किसी सक्सेसफुल मनो दिव्यांग बच्चे की मोटिवेशनल स्पीच और अलग-अलग तरह की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता था। इस समर कैंप में आर्ट एंड क्राफ्ट सेशन के दौरान मनो दिव्यांग बच्चों ते द्वारा अलग-अलग तरह के फ्लावर पोट, ग्लास पेंटिंग, बॉटल

वोइस टू दिव्यांग

डेकोरेशन, मटकी डेकोरेशन, कार्डबोर्ड पेंटिंग बनाए गए थे। अलग-अलग तरह की प्रतियोगिता में गोलगप्पा प्रतियोगिता, फौंसी ड्रेस, वानगी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। अस समर कैंप में बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता को भी बहुत आनंद मिल रहा था और सभी का एक ही कहना था कि जब तक स्कूलें फिर से चालू ना हो तब तक इस तरह की प्रवृत्ति चालू रखनी चाहिए। इस समर कैंप का संचालन संस्था की ओर से संगीता पंचाल और कृतिका प्रजापति ने किया था।

मोटिवेशनल स्पीच के सक्सेसफुल और प्रेरणादाई बच्चों में जय गांगडिया, ओम व्यास, आर्जव ओझा, मंत्र हरखाणी रहे थे। स्पोर्ट्स की ट्रेनिंग गौरांग शिंदे ने दी थी ओर लाफिंग योगा की ट्रेनिंग डॉक्टर सुभाष आप्टे द्वारा दी गई थी। बच्चों को प्राणायाम और योगा की ट्रेनिंग बहुत अच्छी तरह से हेतलबहन शाह द्वारा दी गई थी। अलग-अलग तरह की प्रतियोगिता में निर्णायको में कोन्टी शाह, उन्नति पंचाल और बिजल बहन हरखाणी की भूमिका महत्वपूर्ण रही थी। प्रतियोगिता में इनाम भी उन्हीं की ओर से स्पॉन्सर किए गए थे।

सभी के साथ और सहयोग से 1 महीने का इस वर्चुअल समर कैंप बहुत ही यादगार रहा। गुजरात में सिर्फ यही संस्था द्वारा मनो दिव्यांग बच्चों के लिए ऐसे वर्चुअल समर कैंप का आयोजन किया गया था। यह संस्था हमेशा मनो दिव्यांग बच्चों के विकास के लिए कटिबद्ध है। वर्युअल समर कैंप के अंतिम दिन पर पर्यावरण दिवस सेलिब्रेशन के अंतर्गत फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। जिसमें मनो दिव्यांग बच्चों नें अलग-अलग तरह के फैंसी ड्रेस पहनकर रैंप वॉक किया था। इस फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में मास्क से बना हुआ ड्रेस, वृक्ष, फूल, पत्ते, फल, पर्वत, नदिया जैसे प्राकृतिक ड्रेस आकर्षण के केंद्र बने थे। इस फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में 6 मनो दिव्यांग बच्चों को "बेस्ट ड्रेस" के इनाम भी दिए गए थे। इस वर्चुअल समर कैंप में हिस्सा लेने वाले सभी बच्चों और उनके माता-पिता का आभार व्यक्त करते हुए इस कार्यक्रम का समापन किया गया।

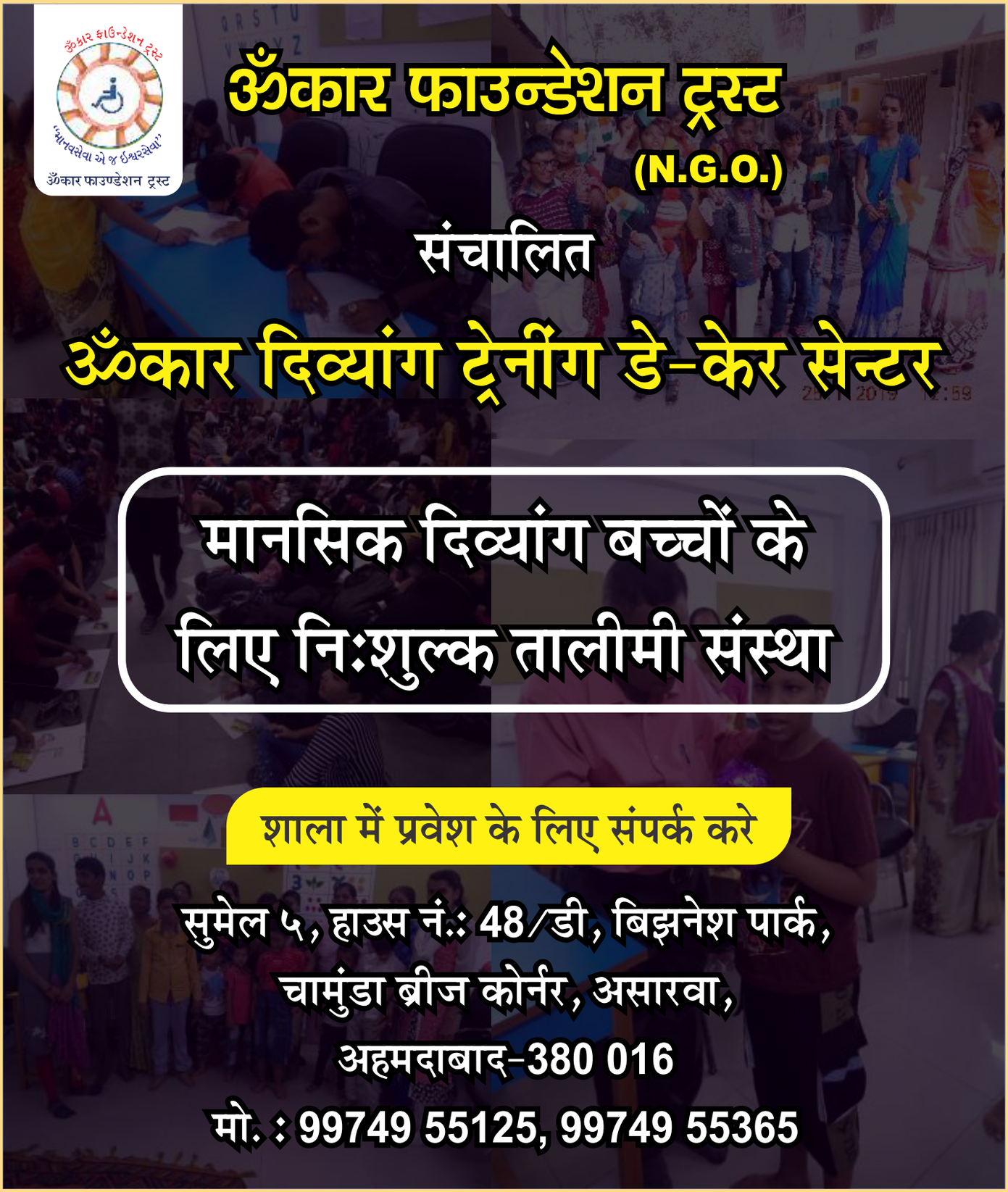

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट
(N.G.O.)

संचालित

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीमी संस्था

शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करे

सुमेल ५, हाउस नं.: 48/डी, बिझनेश पार्क,
चामुंडा ब्रीज कोर्नर, असारवा,
अहमदाबाद-380 016
मो. : 99749 55125, 99749 55365